[illegible] यानन्द [illegible] [illegible]

[illegible] द्वितीयवस्तीमायामाह [illegible]

[illegible] तं [illegible] [illegible] ब्दकाशं [illegible]

[illegible] हन्यानमाला [illegible] कृतिद्वान

लय मायावृक्षित [illegible] पूर्वाकैलाव [illegible]

[illegible] चैतन्यमात्मानं वेदत

[illegible] [illegible] भवतउपरवलमद

[illegible] पुत्रोक्तमा [illegible]

२ मेवब्रह्म नवमायाकउपरइक्काधरी
ब्रह्मकीशक्तित्रयं ईछा क्रिया ज्ञान
मायाकीशक्तित्रयं संसयविपरीतमि
थ्या अथब्रह्मकेनामपंचकाहिये
ब्रह्मकाहिये जीवकाहिये कालकाहिये
कर्मकाहिये सुभावकाहिये ताकोअ
र्थ अखंडित अविनासी अत्येवब्रह्म
नाम आपुकोचीह्निनही तातेंजी
२

वनाम आतुकोकालआतुहीउपराजे
अस्थिवकालनाम सर्वदेहि विषैकमेक
नोअस्थिवकर्मनाम पापिपाटोकत(
वैभीदेउ:खसुखमानापमानेअस्थि
वस्तुभानाम अपमायाकेनामपंच
कहिये मायाकहिये आसाकहिये
सुन्यकहिये शक्तिकहिये प्रकृति
कहिये ताकोअर्थ मायासवलोन

२ निसशिव मायानाम पिंडब्रह्मांडकिआ
दि अतिव आसानाम ब्रह्मतुरीजोति न
ही नातिशून्यनाम संसारजोति रहे अते
रवक्तिनाम अर्ध नाभि निश्चैवस्पैव
प्रकृतिनाम ऐसो संयोग हुवो मिलि
स्रष्टिउपजी पंचतत्व पंचधावी
पृथक पृथक पंचतत्वउत्पैनमातम
हतत्व प्रपंचे उत्पन्ने महतत्ववायु २

तु काहि पंचतत्वकु विवेक काहिये
न त्मतें आकाश कहिये आकाशतें वा
यु कहिये वायुतें तेज कहिये तेजतें आ
पु कहिये आपतें पृथ्वी कहिये पिंड ब्र
ह्मांड कहिये तिनकी कारण माया
तिनकी कारण जड जीवकी कारण
ब्रह्म शुद्ध चैतन्य ब्रह्म माया अनित्य चेत
न शरीर जड चैतन्य ब्रह्म माया

२ तदासन्निधानकवकुन्याबोनालीह
थ्वीपीतवर्ण आपुस्वेतवर्ण तेजर
क्तवर्ण वायुनीलवर्ण आकाशशक्
लवर्ण पंचतत्व पचीस प्रकृति
ताकोव्याख्यानकहिये शब्दआका
शकोअंस चितवायुकोअंस अहंका
र अग्निकोअंस मनः आपुकोअं
स बुद्धिपृथ्वीकोअंसः पंचअंतःक २
रणः।

पंचतन्मात्राकहि

५ एकहिये प्राणअपानव्यानउदा
नसमान प्राणपंचकहिये पंचधा
तुआकाशकोअंसः शब्द स्पर्शवा
युकोअंसः रूपअग्निकोअंस र
सआपुकोअंसः गंधपृथ्वीकोअंस
विषयइंद्रियपंचकहिये पंचतन्मा
त्राकहि पंचैआकाशजायते आका
शेविलीयते आपपृथ्वीमहद्भूतं श्री
ब्रह्म

४ अश्राकाशकोअंस त्वचा वायुकोअं
स चक्षु अग्निकोअंस जिव्हा आपुकोअं
स घ्राण पृथ्वीकोअंस ज्ञानइन्द्रियपं
चकहियै वाक आकाशकोअंस पाणि
वायुकोअंस पाद अग्निकोअंस इ
न्द्रि आपुकोअंस गुदा पृथ्वीकोअंस क
र्मइन्द्रियपंचकाहियै पचीस अंस माया
के एक अंस ब्रह्म बांधि सको महाविष्णु

काहिये विशुमायाकोपारीरकहिय
इतिपंचतत्वपचीसप्रकृति चतुष्
ष्टंत:करणाकहियेपंचतन्मात्राक
हिये एकमेवतत्वकोपारीर ताको
नामश्रयं सूक्ष्मलिंग ज्योतिर्मयक
हिये अव्यक्तकहिये धीयकहिये
एकपंचहतत्वकोपारीर ताकोनाम
श्रयं स्थूलकहिये भौंधिकहिये वि
दी

५ ताइ कहिये शरीरद्वयं जीवअवस्था
नचैतन्य जीवअवस्थाविनिर्मुक्तं
अवस्थाचत्वारि जायत स्वप्नसुषु
प्तितुरीया ताकोव्याख्यानकहि
छ्वीसतत्वमिलिकार्यकरता
करै ताकीजाग्रतअवस्थाकहिये
नचअंसकोव्यापारस्वप्नजायपंद्र
हतत्वकोछवनिद्राकरै ताकोस्वप्न ५

अवस्थाकहि छवीस तत्वकौमिलि
सवे निद्राकेताको सुषुप्ति अवस्था
कहिये जीवको ब्रह्मजाने ताको तु
रीयाअवस्था कहिये ब्रह्मजीव
छयनाही एकैहैजैसा अग्निको
उलवत्त कहिये छयनाही एकैहै
जैसा रविको प्रकाशा कहिये छय

६। नाही ऐसो है जैसो स्वर्गको अभूप
लोकह्रिय छैय नाही ऐसो है जैसो
समुद्रको तरंगाकार का हिये छैय
नाही ऐसो है जैसो ब्रह्म जीव को अंत
र नाही तत्वपद त्वंपद असीपद
तत्वपद ब्रह्म त्वंपद पद माया असी
पद ज्ञान तत्वंपद मिति न्यारो हो
छय जीव तैं न्यारो होय ब्रह्म को ६

अंसजीवजीवकेकोअंससतत्व तत्वको
अंसचैतन्य चैतन्यकोअंसपरवें
मायाकोअंसतामस तामसकोअं
सस्थूल स्थूलकोअंसजडजीव
गुणवीर्यकहिये अर्थजीवनाम
नमोगुणअंशिकाहिये रजोगुण
रक्तकाहिये अथजीवकेनामप
चकाहिये जीवकाहिये ज्योतिकाहिये

१ ओंकार कहिये सूत्र कहिये बिजनक
हिये ब्रह्म जीव दयन्नाही एकै है
अज्ञान तें जीव बुद्धि जानि है ज्ञा ये
नतें जीव ब्रह्म कू जानै लक्षणांति त्रयं
अजहर अ जहर जहद अजहर क
हिये ब्रह्म को जहर कहिये माया
को जहद कहिये ज्ञान कै ब्रह्म मा
यावद्विहरती सदा सन्निधान जी १

वश्वलक्षणानित्रयं एवं मुद्रापंच
कहिये खेचरि भूचरी चाचरी अ
गोचरी उन्मानि ता को विचार कहु
ये मुखमध्ये खेचरी मुद्रा नादवि
उत्पद्यते नादविंदसमंकृत्वा मु
द्राभवति खेचरी नासिकामध्ये
भूचरी मुद्रा प्राणापान उत्पद्यते
प्राणापानसमंकृत्वा मुद्रा भवति

८ भूचरी चक्रमध्ये चाचरीमुद्रावि
नैवैतन्यउत्पद्यते चित्ताचैतन्य
समेहत्वामुद्राभवति चाचरी द
र्भमध्ये गोचरीमुद्राश्रुतिज्ञान
उत्पद्यते श्रुतिज्ञानसमंहत्वा
मुद्राभवति गोचरी ...मध्ये
मुद्राउन्मनिमुद्रा पूलतबापुउत्प
द्यते ननमम्भुभयनामि नद्राम ८

वतेउत्पत्ति ह्वैमहाप्रलयकहिय
ज्ञानकृततत्वकोकारणजेसौऊँलाल
हस्तुकाहहोत मायाकेवारीद्ध
य एक पंद्रहतत्वकोधारीर एक
नवतत्वकोधारीर ताकोविवेकक
हिये पंद्रहतत्वकोविनसै नवत
त्वकोवासनालैश्रवतोद्धयछूटी
रकोविचहकरै निर्वाणपदक्षेमा

हो यग्रग्र्थ बर पीत: पीतउज्ज्व
लखंड: त्रिमान अथमा इनतैंन्यारो
होय तबजीवन्मुक्तकहिये अथवा
वा कष्चल्ताविपरीतपरंपति मध्यमावैप
रीताको विचार उसासवाहिजाय
ताकोपराकहिये उस्वासव्यहैमा
मायताको पाछिपिरैताकोपरंप

कहिये अस्वास माहि समायतो ताको मध्य
माकहिये स्थिर जायवै सैपवन ताको
वैषरीकाहिये एवंवाच्यानुष्टये अथ
षट उर्मीजानिवैको विचारु कामक्रो
म धलोभमोह मद मत्सर ताको अर्थः मे
थुनकुकामकहिये क्रोधकोकालक
हिये ममिताकोलोभकहिये बंधनको
मोहकहिये यौवनकोमदनकहिये

[illegible]

१ मायाविचार अहंकार्यमि [illegible] मोट [illegible] य
हेनहरिदासन्याय पारस [illegible]
मतत्त्वस्मान्याय वीरहेनीय [illegible]
सुखन्याय एवंबहमोजातैतो
वनुह्रकहावेंपरमातनकोकहरे [illegible]
य इतिश्री मायाब्रह्मकोनिरुपण
भूमिकासमाप्त ग्रंथ प्रज्ञा [illegible]
लिखतम् [illegible] शुभमस्तु